(MIJ) 2019, Vol. No. 5, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में परिवार एवं परिवारेतर सम्बन्धों की दृष्टि

डॉ0 विनीता रानी

एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग

के0 जी0 के0 पी0 जी0 कॉलेज, मुरादाबाद उत्तर प्रदेश

VIEW OF FAMILY AND EXTRA-FAMILY RELATIONS IN POST-INDEPENDENCE HINDI STORY

Dr. Vineeta Rani

Associate Professor, Department of Hindi

KGK(PG) College, Moradabad, Uttar Pradesh

ABSTRACT

The post-independence stories present self-conflict and dramatic tension. In this decade, apart from the stories of rural areas, stories of towns and cities were also written. The names of Shiv Pratap Singh, Markandeya, Nagarjuna, Rajendra Awasthi and Phanishwar Nath "Renu" are main among regional storytellers. Shiv Pratap Singh's "Aarpar Ki Mala", "Murda Sarai" etc. are major story collections. Bhishma Sahni, Shailesh Matiani, Shekhar Joshi, Rangheya Raghav, Madhukar Gangadhar and Shani etc come at this turn of the tradition. The elements of realism, modernity and struggle are visible in his stories. New storytellers have seen the disintegrated man in the middle of the agony of metropolitan life from different points of view, while the old story reflects the clear influence of Gandhian philosophy of life. The connectivity of a new story is found in new images, new metaphors, new signs and new symbols. In old stories, these elements are used only in name, such as Kamleshwar's "Naagmani" and Bhishma Sahni's "Vad-Chu" stories.

सारांश

स्वातन्त्रयोत्तर कहानियाँ आत्म–संघर्श एवं नाटकीय तनाव को प्रस्तुत करती हैं। इस दषक में ग्रामांचल की कहानियों के अतिरिक्त कस्बों एवं नगरों की कहानियाँ भी लिखी

गयी। आंचलिक कहानीकारों में षिव प्रताप सिंह, मार्कण्डेय, नागार्जुन, राजेन्द्र अवस्थी एवं फणीष्वर नाथ ''रेणु'' के नाम मुख्य हैं। षिव प्रताप सिंह के ''आरपार की माला'', ''मुर्दा सराय'' आदि प्रमुख कहानी संग्रह हैं। परम्परा के इसी मोड़ पर भीश्म साहनी, षैलेष मटियानी, षेखर जोषी, रांघेय राघव, मधुकर गंगाधर एवं षनि आदि आते हैं। इनकी कहानियों में यथार्थपरकता, आधुनिकताबोध एवं संघर्श षीलता के तत्व दृश्टि गोचर होते हैं। नये कहानीकारों ने विघटित मनुश्य को महानगरीय जीवन की यंत्रणा के मध्य विविध दृश्टियों से देखा है, जब कि पुरानी कहानी में गाँधीवादी जीवन दर्षन का स्पश्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। नई कहानी की संपृक्ति नवीन बिम्ब, नवीन उपमान, नव्य संकेत एवं नूतन प्रतीकों में मिलती है। पुरानी कहानियों में ये तत्व नाम मात्र को प्रयुक्त हुए हैं, यथा – कमलेश्वर की – ''नागमणि'' एवं भीष्म साहनी की ''वाड़–चू'' कहानियाँ।

प्रस्तावना

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में पारिवारिक और अपारिवारिक सम्बन्धों के दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। इस अवधि का साहित्यिक परिदृश्य 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद भारत में हुए व्यापक सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवर्तनों को दर्शाता है। लेखकों ने पारिवारिक गतिशीलता के विभिन्न पहलुओं की खोज की और परिवारों के भीतर संबंधों की बदलती प्रकृति के साथ–साथ विकसित होने वाली बातचीत की जांच की। पारंपरिक पारिवारिक संरचना के बाहर व्यक्तियों के बीच।

परिवार की गतिशीलता में बदलाव : *स्वतंत्रता के बाद के हिंदी साहित्य में अक्सर पारंपरिक संयुक्त परिवार प्रणाली से एकल परिवारों में बदलाव का चित्रण किया जाता है। लेखकों ने इन नई पारिवारिक इकाइयों के भीतर संबंधों की जटिलताओं को उजागर करते हुए संक्रमण से उत्पन्न होने वाले तनावों और संघर्षों का पता लगाया।*

उन्होंने पीढ़ी के अंतराल, बदलती लैंगिक भूमिकाओं और पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक आकांक्षाओं के बीच टकराव जैसे मुद्दों पर विचार किया।

व्यक्तिगत स्वायत्तता : *स्वतंत्रता के बाद के साहित्य में व्यक्तिगत स्वायत्तता और व्यक्तिगत आकांक्षाओं पर ध्यान प्रमुख हो गया। वर्णों ने पारिवारिक अपेक्षाओं और सामाजिक मानदंडों की बाधाओं से मुक्त होने की मांग की, जो अक्सर परिवारों के भीतर प्राधिकरण और पारंपरिक पदानुक्रम को चुनौती देते थे। परिवार इकाई की सीमाओं के बाहर व्यक्तित्व और आत्म–अभिव्यक्ति की यह खोज एक स्वतंत्र भारत के बदलते सामाजिक परिदृश्य को दर्शाती है।*

महिला एजेंसी : *स्वतंत्रता के बाद के हिंदी साहित्य में महिलाओं के चित्रण और परिवारों और समाज के भीतर उनकी भूमिकाओं में महत्वपूर्ण बदलाव देखा गया है। महिला चरित्र स्वतंत्र, मुखर व्यक्तियों के रूप में उभरे, पितृसत्तात्मक मानदंडों को चुनौती देते हुए और अपनी एजेंसी पर जोर देते हुए। इन आख्यानों ने महिलाओं के संघर्षों और आकांक्षाओं, शिक्षा के लिए उनकी खोज, करियर के अवसरों और बड़े पैमाने पर परिवार और समाज के भीतर अधिकारों की उनकी दावेदारी का पता लगाया।*

पारस्परिक संबंध : *स्वतंत्रता के बाद का हिंदी साहित्य भी गैर–पारिवारिक संबंधों में तल्लीन हो गया, जिसमें मित्रता, प्रेम संबंधों और रक्त संबंधों से परे संबंधों पर जोर दिया गया। लेखकों ने इन संबंधों की जटिलताओं का पता लगाया, उनकी परिवर्तनकारी क्षमता और सामाजिक और सांस्कृतिक सीमाओं को पार करने की क्षमता पर प्रकाश डाला। ये आख्यान एक अधिक समावेशी और विविध समाज को दर्शाते हैं, जहाँ रिश्ते केवल पारिवारिक बंधनों द्वारा निर्धारित नहीं होते थे।*

सामाजिक समालोचना : *स्वतंत्रता के बाद के हिंदी साहित्य ने अक्सर विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर सामाजिक समालोचना और टिप्पणी के माध्यम के रूप में कार्य किया। लेखकों ने पारिवारिक और गैर–पारिवारिक संबंधों पर जाति, वर्ग और धार्मिक विभाजन के*

प्रभाव की जांच की। उन्होंने सामाजिक पूर्वाग्रहों पर सवाल उठाते हुए और सामाजिक सद्भाव और एकता की वकालत करते हुए, अंतर–विश्वास और अंतर्जातीय संबंधों की जटिलताओं का पता लगाया।

कुल मिलाकर, स्वतंत्रता के बाद का हिंदी साहित्य स्वतंत्र भारत की बदलती सामाजिक गतिशीलता को दर्शाता है। इसने पारिवारिक संरचनाओं के परिवर्तन, व्यक्तिगत स्वायत्तता के दावे, महिलाओं के सशक्तिकरण और पारंपरिक पारिवारिक संबंधों से परे संबंधों के महत्व की खोज की। इन आख्यानों के माध्यम से, लेखकों ने स्वतंत्रता के बाद के भारत में व्यक्तियों और समुदायों के विविध अनुभवों में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हुए तेजी से विकसित हो रहे समाज में मानवीय अंतःक्रियाओं की जटिलताओं को पकड़ने की कोशिश की।

स्वातन्त्रयोत्तर कहानीकारों की दृश्टि बहुआयामी रही है। उन्होंने दाम्पत्य–जीवन की विशमता, पारिवारिक विघटन, अन्तर्द्वन्द्व एवं व्यक्ति–मन की रिक्तता को सटीक धरातल पर प्रस्तुत किया है। सुदर्षन चोपड़ा की ''स्वीकारान्त'' प्रणव कुमार बंद्योपाध्याय की ''आखिर'' कामता प्रसाद की ''यजमानी'' आदि कथाओं में मनुश्य के अन्तर्मन की व्यथा–कथा, अर्थहीन व्यक्ति की करूण गाथा, नारी प्रेम की टूटन एवं आर्थिक विशमताजन्य जिन्दगी को ढोते हुए निम्न मध्यम वर्गीय व्यक्ति की स्थितियों का अत्यन्त हृदयस्पर्शी चित्रण है।

स्वातन्त्रयोत्तर कहानी में व्यक्ति नगरीय जीवन की विभिन्न समस्याओं से जूझते हुए जीवन यापन करता है। महानगरीय जीवन की यंत्रणा मनुष्य को खोखली जिन्दगी के लिये विवश करती है। उसमें क्षणबोध की प्रवृत्ति पनपने लगती है। यह एक ही क्षण में सम्पूर्ण सुखों की प्राप्ति कर लेना चाहता है। आगे न जाने किन भयानक एवं जटिल परिस्थितियों का सामना करना पड़ जाय।

(MIJ) 2019, Vol. No. 5, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

सातवें दशक में आंचलिक कहानियों का निर्देशन मिलता है। भारतवर्ष के अधिकांश नगर भी गाँवों से परिणत होकर चले हैं। गाँव ही हमारी रीढ़ है। ग्रामीण पृष्ठभूमि पर आधारित कथाकारों की आंचलिक कहानियों की संख्या अधिक है। आंचलिक कथाकारों ने जीवन के यथार्थ को विविध आयामों में प्रस्तुत किया है। इनकी कहानियों में अंचल विषेश की छवियाँ और अछवियाँ षक्ति एवं अषक्ति तथा प्राकृतिक विषेशताएँ उभरी हैं। फणीष्वर नाथ रेणु, की ''तीसरी कसम'', ''आदिम रात्रि की महकें'', ''प्रेतमुक्ति'', ''पोस्ट मैन'' षिव प्रसाद सिंह की ''सपेरा''' मुरदा सराय'', बिन्दा महाराज'' मार्कण्डेय की ''भूदान'', ''हंसा जाई अकेला'' तथा हिमांषु जोषी की ''एक वट वृक्ष था'' एवं ''धरती और परदेष'' आदि कथाएँ ग्रामीण परिवेष से अनुस्यूत है।

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में परिवार एवं परिवारेतर सम्बन्धों की दृश्टि से नारी के रूपों की अनेक प्रवृत्तियाँ उभर कर सामने आयी हैं। भारत में विवाह–पूर्व नारी को अनेक स्थितियों के मध्य गुजरना पड़ता है। विवाह–पूर्व नारी का स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में मुख्यतः कन्या और प्रेमिका रूप का ही चित्रण हुआ है। स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी ने विवाह–पूर्व जहां पारिवारिक जिम्मेदारियों के विशय में संघर्श किया है। (कमलेष्वर की तलाष, मोहन राकेष की ''वासना की छाया है'', मन्नु भण्डारी की ''क्षय'' निरूपमा रेवती की ''ठहरी हुई खरोंच'' आदि) वहाँ विवाह–पूर्व प्रेम सम्बन्धों के कारण पारिवारिक यातनाओं को झेला भी है। (मोहन राकेष की ''उसकी रोटी'', अमरकान्त की ''असमर्थ हिलता हाथ'', अचला षर्मा की ''धुंधले अधेंरे में'' आदि) जहाँ वह स्वच्छन्द रूप से प्रेम–सम्बन्ध रख पायी है या नहीं रख पायी है वहाँ वह कुंठा, द्वन्द, तनाव, भटकाव एवं षोशण का षिकार भी हुई है। (मोहन राकेष की ''सामायें''' कमलेष्वर की ''मेरी प्रेमिका'', मन्नु भण्डारी की ''घुटन'', भीश्म साहनी की ''रास्ता'', महीप सिंह की ''बलाटिंग पेपर'' आदि) कहीं–कहीं वह यौन सम्बन्धों के प्रति स्वच्छन्द भी हुई है। (निर्मल वर्मा की ''अमालिया'', श्रीकान्त वर्मा की ''खेल का मैदान'', ''लड़की'' षैलेष मटियानी की ''निर्णय'' आदि) और विवाह–पूर्व , प्रेम–सम्बन्धों के

निमित्त त्याग एवं बलिदान भी किया है। (कृश्णा सोचती की ''बादलों के घेरे'' षैलेष मटियानी की ''षीषे के पार उगी हरियाली'' आदि) जहाँ ऐसा नहीं कर पायी है वहाँ पर प्रेम सम्बन्धों में अतीत वर्तमान के द्वन्द में ही झूलती रही है (निर्मल वर्मा की ''परिन्दे'', मन्नू भण्डारी की ''यही सच है'', एक बार और'', उशा प्रियम्बदा की ''मछलियाँ'' आदि या उसने अपने पारिवारिक सम्बन्धों) (पिता और बेटी के विषेश रूप से) एवं प्रेम सम्बन्धों में अपनी अस्मिता की तलाष की है (महीप सिंह की ''कील'' सिम्मी हर्शिता की ''चक्रभोग'', निर्मल वर्मा की ''लवर्स'' महीप सिंह की ''उजाले के उल्लू'', सोमा बीरा की ''आखों वाले चेहरे, सिम्मी हर्शिता की ''उसका मन'' आदि) विवाह–पूर्व नारी की इन स्थितियों, मनः स्थितियों आयामों एवं सन्दर्भों से यह स्पश्ट होता है कि भारतीय नारी अभी भी पारिवारिक, रूढ़ियों, मान्यताओं, परम्पराओं एवं प्रेंम–सम्बन्धों के मध्य आने वाली निशेधात्मिक बातों से मुक्त नहीं हो पायी है। कहानीकारों ने उसे स्वतन्त्र इकाई के रूप में बिना किसी सिद्धान्त या आदर्ष का आधार लिये तो चित्रित किया है किन्तु परम्परा और समकालीन बोध से वे भी अलग नहीं हो पाये है।

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी पत्नी रूप में परम्परागत और नवीन दोनों ही आयामों को उभारा है। स्वतन्त्रता–प्राप्ति के पष्चात् कहानीकारों ने नारी के पत्नी–रूप को हिन्दू आदर्षों एवं मूल्यों के माध्यम से चित्रित नहीं किया है। इसलिए नारी परम्परागत आदर्षों सतीत्व, त्याग बलिदान, क्षमा आदि गुणों के रूप में कम ही चित्रित हो पायी है। परिवार नारी के लिए आज भी केन्द्र बिन्दु है। इसलिये वह पुरूश के प्रति या तो निश्ठामयी रही है। (कमलेष्वर की ''राजा निरबंसिया'' मन्नु भण्डारी की ''नषा'', धर्मवीर भारती की ''गुलकी बन्नों'' भीश्म साहनी की ''दोपहर का भोजन'', मंजुल भगत की ''नालायक बहू'' आदि) या पति की क्रुरता एवं यातना को सहन करते हुए कभी मानसिक आक्रोष और कभी मानसिक विद्रोह व्यक्त किया है। (कमलेष्वर की ''एक अष्लील कहानी'', मोहन राकेष की ''खाली'' ज्ञानरंजन की दाम्पत्व'', मैथुल भगत

(MIJ) 2019, Vol. No. 5, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

की ''नागपाष'' आदि। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पष्चात् नारी के पत्नी रूप की सबसे बड़ी उपलब्धि है। त्रिकोणात्मक सम्बन्ध से उत्पन्न द्वन्द एवं तनाव या द्वन्द्व निद्वन्द भाव की मनः स्थितियाँ। पति–पत्नी, प्रेमी, पति–पत्नी–प्रेमिका के त्रिकोण में नारी पत्नी और प्रेमिका दोनो की भूमिकाओं में आयी है। इसमें एक और पत्नी और प्रेमिका की भूमिका में द्वन्द एवं तनाव है। (राजेन्द्र यादव की ''एक कमजोर लड़की की कहानी'', ''छोटे–छोटे ताजमहल'', कमलेष्वर की ''जो लिखा नहीं जाता'', रवीन्द्र कालिया जी की ''नौ साल छोटी पत्नी'', षैलेष मटियानी ''सखियों पर अटका अतीत'' आदि) और दूसरी ओर पत्नी और प्रेमिका की भूमिका में निर्द्वन्द्व भाव की स्थिति है। (निर्मल वर्मा की अधेंरे में ''पिता और प्रेमी'' मन्नू भण्डारी की ''ऊँचाई'', ''तीसरा आदमी'', दूधनाथ सिंह की ''षिनाख्त'' महीप सिंह की ''काला बाप गोरा बाप'' निरूपम सेवसी का संक्रमण आदि। इसके अतिरिक्त नारी ने विवाहोपरान्त प्रेम–सम्बन्धों में उसने पति या प्रेमी में से एक का परित्याग भी किया है। (महीप सिंह की ''सीधी रेखाओं का वृत्त'', मृदुला गर्ग की ''अवकाष'' आदि) जब उसने अपने पति को किसी दूसरी स्त्री के साथ सम्बन्ध रखे देखा है तब वह ईर्श्यालू भी हो उठी है। उसमें आक्रोष नैतिक सीमाओं का भी अतिक्रमण कर गया है। (राजेन्द्र यादव की ''पुराने नाले पर नया फलैट'', दूधनाथ सिंह की ''रीस'', काषीनाथ की ''कस्बा'' ''जंगल'' और ''साहब की पत्नी'' आदि) दूसरी ओर वह पति की षंकाओं और सन्देहों की भी षिकार हुई है। (रवीन्द्र कालिया की ''हरी हुई औरत'', कृश्ण बलदेव वेद की ''अवसर'' आदि) कहीं–कहीं उसका स्वच्छन्द, स्पर्धामय एवं भोगवादी रूप भी मिला है। (मोहन राकेष की ''सैफटी पिन'', निर्मला वर्मा की ''डेढ़ इंच ऊपर'' दूधनाथ सिंह की ''रक्तपात'' कृश्ण बलेदेव की ''त्रिकोण'' तोमा बीरा की ''डायन की परछाई'' आदि) वह तलाकषुदा पत्नी के रूप में भी सामने आयी है। (मोहन राकेष की ''एक और जिन्दगी'', कमलेष्वर की ''देवा की माँ'', निरूपम सेवती की ''सुनहरे देवदास'' आदि) और प्रेमिका से पत्नी रूप में परिणत होकर भी (राजेन्द्र यादव की ''टूटन'' ममता कालिया की ''दो जरूरी चेहरे'', ज्ञानरंजन की ''हास्यरस'' आदि) अतः पत्नी रूप की विभिन्न मनःस्थिति से स्पश्ट है कि

स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी कहानी में नारी पत्नी रूप में परम्परागत और परिवर्तित दोनों ही मनःस्थितियों में उभर कर आती है।

समाज में सम्बन्धों के परिवर्तन की प्रक्रिया में नारी की अहम भूमिका है। आधुनिकता के कारण स्त्री–पुरूश सम्बन्धों में अनेक प्रकार की जटिलताएं दिखायी देती है। धार्मिक विष्वासों के धीरे–धीरे क्षीण होने तथा सामाजिक नैतिक मूल्यों में विघटन के कारण स्त्री–पुरूश सम्बन्धों के नये स्तर और रूप सामने आये है। सामाजिक सन्दर्भ में नये सम्बन्ध और परिवर्तन की प्रक्रिया स्त्री–पुरूश सम्बन्धों को नया रूप देती है। पाष्चात्य प्रभाव एवं सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक दबावों ने स्त्री–पुरूशों के सम्बन्धों के चित्रण में अपनी विषेश रूचि दिखायी है और उन्हें व्यापक फलक पर चित्रित किया है। आलोच्य कहानियों में समकालीन मनुश्य की यह तस्वीर उतारी गयी है जिसमें मनुश्यता की जगह स्वार्थरता कुटिलता विवेक षून्यता और हृदयहीनता जैसी वृत्तियों ने अपना डेरा डाल दिया है। संयुक्त परिवार की विश्रंखलता भी इन कहानियों का विशय बनी है। ऐसी कहानियों में कमल कुमार की ''पहचान'' ऋता षुक्ल की ''क्रोध बध और अन्य कहानियाँ'' उल्लेखनीय है। यों तो आज संयुक्त परिवारों का अस्तित्व समाप्त हो चुका है, ऊपर से जो परिवार संयुक्त दिखायी देते हैं, उसमें सच्चाई नहीं है। यही कारण है कि आलोच्य कहानियों में पारिवारिक स्तर पर संयुक्त परिवार की समस्याएँ कम ही चित्रित हुई है। इसके विपरीत परिवार के बीच सम्बन्धों की संवेदहीनता को अनेक स्तरों पर चित्रित किया गया है। मिथिलेष्वर की कहानी ''कितनी दुनियाँ'' प्रियंवंदा ही ''सूखे पत्ते'' चन्द्र किषोर जायसवाल की ''प्रिया दुलारी'' वाला षर्मा की ''अभिषप्ता'' चित्रा मृदुगल की ''मुआवजा'' विजेन्द्र नाथ मिश्र की ''खामोषी'' चन्द्रकिरण सोनरिक्षा की दर्द ''चन्द्रकान्ता की ''एक युद्ध और'' घनष्याम आस्थाना की ''अपने लोग'' गायत्री कमलेष्वर की ''रिष्तों की कतरनें'' मेहरून्निसा परवेज की ''अन्तिम चढ़ाई'' बलराम की ''षिक्षा काल'' रेणु श्रीवास्तव की ''स्वीकारोक्ति'' नरेन्द्र नागदेव की ''फ्रांस'' तथा ''सैलानी'' रामदरष मिश्र की ''आखिरी चिट्ठी'' आदि

(MIJ) 2019, Vol. No. 5, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

कहानियों में परिवार के बीच उपजे असंवाद तथा उनके कारण और स्थितियों को अच्छी तरह चित्रित किया गया है।

दाम्पत्य जीवन में भटकते जीवन मूल्यों पर बढ़ी तेजी से प्रभाव पड़ रहा है। आधुनिक स्त्री पुरूश अपनी–अपनी जगह पूर्ण व्यक्तित्व की खोज में क्रियाषील दिखायी देते है, किन्तु खोज की दिषा उनके व्यक्तित्वों को खण्डित कर रही है। दाम्पत्य जीवन की टूटन और ठण्डेपन के अहसास को आलोच्य कहानियों ने कई स्तरों पर देखा और चित्रण किया है। रामदरष मिश्र की कहानी ''अतीकता विश'' राजहंस की ''जनवास'' क्राति त्रिवेदी की ''नीली आँखों का आकाष'' में वैवाहिक स्थिति के प्रथम चरण में पत्नी के चरणों में बिछा रहने वाला पतिवादी में उसकी खोज करता है, पुरूश के दोहरे मानदण्डों से टूटे हुए परिवार सुमित अययर की कहानी ''सुबह दर सुबह'', ''मुट्ठी में कैद आकाष'' (अर्पण टैगोर) आदि में है। पति–पत्नी की छोटी–छोटी मूक आवष्यकताओं को न समझने पर, अवकाष प्राप्त (षषि प्रभा षास्त्री) का परिवार टूटता है। इसके अतिरिक्त ''षेश होते हुए'' (ज्ञान रंजन) लाल हथेलियाँ (रामदरष मिश्र) ''नौ साल की पत्नी'' (रवीन्द्र कालीया), परिणति (नरेन्द्र कोहली) एक किन्तु और (निर्मला बाजपेयी) पूरक (मणिक मोहिनी) अनुत्तरित (षषि प्रभा षास्त्री) वह मेरे नहीं थे (मणिक मोहिनी मवेषी (गिरिदास किषोर) प्रतिक्रिया (ललित षुक्ल) बूंद का हक (मेहरून्निसा परवेज) उसका न होना (मणि मोहनी) कौन से पापा (स्वदेष दीपक) बीस या पच्चीस (मधुविष्वर) संधिपत्र (दीप्ति खण्डेलवाल) हरि षनिवार (जवाहर सिंह) एक थी षकुन दी (सच्चिदानन्द धूमकेतु) नालायक बहू (मंजूल भगत) आदि कहानियाँ दाम्पत्य की टूटन, उसके कारण और परिणामों को रेखांकित करती है।

दाम्पत्य जीवन की टूटता, घुटन, ऊब और ठण्ठेपन को आलोच्य कहानियाँ में दाम्पत्य के बीच एक तीसरे के प्रवेष ने तोड़ा है। ऊशा प्रियवंदा की प्रतिध्वनियों कितना बड़ा झूठ, स्वीकृत आदि कहानियों में इस तीसरे की अनिवार्य उपस्थित है। इसके अतिरिक्त मेहरून्निसा परवेज की कहानी ,,एक पुरूश एक गधा'' गोविन्द्र मिश्र की

(MIJ) 2019, Vol. No. 5, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

कहानी ''अर्धवृत्त'' इन्दिरा आचार्या की ''निर्णयों के बीच'' वानों सरताज की ''गहरे समंदर सफर'' सत्येन कुमार की ''जंगल'' आदि कहानियाँ प्रेम त्रिकोण की कहानियाँ है।

दाम्पत्य सम्बन्धों की टूटन का परिणाम तलाक में भी कुछ कहानियों में हुआ है। सम्बन्धी के परिवर्तन की प्रभाव परम्पारित विवाह संस्था के प्रति प्रतिक्रियात्मक मानसिकता के साथ इन कहानियों में चित्रित हुआ है। ललित षुक्ल की ''भरोसा'' राजीसेठ की ''तीसरी हथेली'' अनावृत्त ''कोण'' अपने दायरे दूसरी औरत'' ''मेरे लिये नहीं'' श्रीकान्त षर्मा की ''दूसरे के पैर'', परिणय'' ''ट्यूमर'' आदि कहानियाँ विवाह संस्था का पुर्नरीक्षण करती दिखायी देती है।

विवाह पूर्व या विवाहेतर यौन सम्बन्ध एक समस्या के रूप में सामने आये हैं, जो कहीं न कहीं पारिवारिक सम्बन्धों की टूटन के कारण बने हैं। ऐसी कहानियों में ''नौ साल की छोटी पत्नी'' (रवीन्द्र कालिया) समुद्र (रामकुमार) तीसरी हथेली (राजी सेठ), दो आाखों वाले चेहरे (षोभा वीरा), एक सम्बोधन (वेद प्रकाष गौतम), टहनियों पर धूप (मेहरून्निसा परवेज), कितनी कैदे (मृदुला गर्ग), मननाही दस बीस (बटरोही), खत्म होने के बाद (मणिका मोहिनी), आने वाली दुनिया (षनी), वैक्यूम (माहेष्वर) जलसतह (ध्रुव जायसवाल), फाल्गुनी (मेहरून्निसा परवेज), आपे तोवा (नसिरा षर्मा) ''नहीं–नहीं'' (ईष्वर षरण सिंघल), दो पक्षी का अपनापन (गौरी षंकर राजहंस) आदि कहानियों में दाम्पत्य की एकरसता को प्रेम सम्बन्धों से सरस किया गया है। विवाहपूर्व प्रेम सम्बन्धों की परिणति के अनुरूप में प्रेम विवाह के सुखान्त और दुखान्त दोनों परिणामों की कई स्थितियाँ आलोच्य कहानियों में दिखायी देती है। इनमें प्रेम विवाह एक विकल्प के रूप में ही अधिक दिखायी देता है। अमृत लाल नागर की कहानी ''मन के संकेत'' पंकज निश्ठ की ''खून'' मेहरून्निसा परवेज की ''कोई नहीं'' राजी सेठ की ''ढलान पर'' क्षमा षर्मा की ''सपना'' और सुमन्त वल्लभ सिद्धार्थ की ''कथा'' मेहरून्निसा परवेज की ''सोने की वेल्ट'' वेला मुखर्जी की ''असतराग'' गुरूवक्ष सिंह की

''रत्नावलि'' मीना अग्रवाल की उस पार इसे संवेदना से जुड़ी कहानियाँ हैं। षिक्षा ने निष्चय ही नारी को आत्म निर्भर बनाने में सहायता दी है, किन्तु नारी स्वातन्त्र्य के समान दावों और आन्दोलनों के बाबजूद नारी की स्थिति आज भी दयनीय है। भारतीय समाज में व्यावहारिक तौर पर वह दूसरे दर्जे की नागरिक ठहरती है। कृश्णा अग्निहोत्री के संकलन ''विरासत'' की कहानियाँ इनकी साक्षी है। इसी प्रकार एक तष्वीर (इन्दूवाली) 'अलग –अलग नम्बर (जगदीष चन्द्र) ''लैलामजनू'' (ममता कालिया), काली लकीर (देवकी अग्रवाल) सिसकते सपनों की षाम (कृश्ण अग्निहोत्री) आदि कहानियों स्त्रियों की आत्म निर्भरता एवं सज्जन्य परिणामों को सामने लाती है।

स्वातन्त्र्योत्तर की हिन्दी कहानी में रूत्री–पुरूश सम्बन्धों का व्यापक धरातल पर अभिव्यक्ति मिली है। इस दषक की अधिकांष कहानियाँ टूटते परिवेष जीवन मूल्यों, सम्बन्धों की स्वार्थरता एवं निरन्तर घर, परिवार और समाज से कटते जाने की स्थितियों का चित्रण करती है। अधिकांष कहानियों में संयुक्त परिवार गायव है, दो–एक कहानियाँ संयुक्त परिवार की समस्या को सामने लायी है। उनमें भी संयुक्त परिवार के बीच व्यक्ति के व्यक्तितत्व के लगातार क्षीण होते जाने एवं संयुक्त परिवार के टूटने की स्थितियों का चित्रण है।

बदलते परिवेष ने व्यक्ति सम्बन्धों को एक दम बदल दिया। बदलते हुए पारिवारिक सामाजिक वातावरण में जो सम्बन्ध विकसित हुए उनमें अनेक प्रकार की घुटन, कुंठाएं एवं संत्रास की जिन्दगी दी। नारी षोशण के अनेक आयाम सामने आये। व्यक्ति की इन विकृतियों को आलोच्य कहानियों ने बड़ी सच्चाई से अनुभव किया है और उन्हें अनेक स्तरों पर अभिव्यक्त किया है।

सन्दर्भ –

1. गुलाब राय , काव्य के रूप , पृ.सं . 5
2. पाण्डेय, मैनेजर, साहित्य के समाजषास्त्र की भूमिका , प . 13
3. सं. रामसजन पाण्डेय, उदयभानु हँस रचनावली – 1, सरगम, पृ. सं. 389

(MIJ) 2019, Vol. No. 5, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

4. कल्पना, अंक , जनवरी 1956
5. सं . परमानंद श्री वास्तव , प्रतिनिधि कविताएं , पृ . सं . 91
6. भरत भूषण अग्रवाल य एक उठा हुआ हाथ , पृ . सं . 21
7. धूमिल य संसद में सड़क तक , पृ . सं . 8
8. कुँवर नारायण , कोई दूसरा नहीं , पृ . सं . 67
9. सं . यतीन्द्र मिश्र, कुँवर नारायणः संसार भाग – 1, पृ . सं . 68

REFERENCE

1. Gulab Rai, Forms of Poetry, p. 5

2. Pandey, Manager, The Role of Sociology of Literature, p. 13

3. S. Ramsjan Pandey, Udaybhanu Hans Rachnavali - 1, Sargam, p. No. 389

4. Kalpana, Issue, January 1956

5. S. Parmanand Sri Vastav, Representative Poems, p. No. 91

6. Bharat Bhushan Agarwal A Raised Hand, p. No. 21

7. Till the road in Dhumil or Parliament, p. No. 8

8. Kunwar Narayan, None Other, p. No. 67

9. S. Yatindra Mishra, Kunwar Narayan: Sansar Part - 1, p. No. 68